''सच्चा सौदा हरिनाम है सच्चा ब्योपारा राम''

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश जनवरी, 960 में प्रकाशित प्रवचन)

ऐ यार क्यों झगड़ों में पड़ा तू खोता है समय।
कर दूर यह झगड़े कि तेरा आया है समय ।।
दुनियां के किस्से कहिये भला कब हुये हैं ख़तम।
क्यों जान इनमें अपनी है नाहक लड़ा रहा ।।
बिलफ़र्ज तू जहां में बने कारूऐ ज़मां ।
क्या शान्ति होगी तुझे यह तू ज़रा बता ।।
अफ़सोस चार दिन भी रहा तू न दहर में ।
आया अभी था और अभी उठ खड़ा हुआ ।।
गर कैसरो, सिकन्दरो, दारा बने भी तू ।
रूख़सत के वक्त सारे ही देंगे तुझे दग़ा ।।
कुछ तूही दे बता ऐ शहन्शाह क्या करें ।
ना मरने को है राज़ी ना जीने में है मज़ा ।।

दुनियां ख्वाबे खरगोश में सो रही है। उसको यह भी होश नहीं, ''मैं कहां रह रहा हूं ?'' जिनकी आंखें खुली हैं यह देखते हैं कि यह दुनियां हमेशा रहने का मुकाम नहीं है। जो भी आया सब चलने के लिये आया है। यह मन्जिल मकसूद नहीं, यह एक Passing Phase (बदलने वाला दृश्य) है कहो। जो भी आये वे सब गये। मगर हम क्या समझते हैं ? हम यह समझते हैं, यही दुनियां हमेशा रहने की जगह है।

अगर फिरदौस बर रूए जमीं अस्त हमीं अस्तो हमी अस्तो हमी अस्त ।।

(अर्थात् यदि कोई स्वर्ग है तो वह यही है, यही है, यही है) तो हम तो समझते हैं कि दुनियां में सब कुछ है, यहीं के सुख हमेशा रहेंगे। मगर यह देखने में आता है, कि जिनको हम सुख समझते हैं ना, रूपये पैसे, जायदादों के इकट्ठे करने में, बाल-बच्चों के बनाने में, बड़ी-बड़ी जायदादें खड़ी करने में, वही फिर हमारे दुख का कारण बन जाते हैं। यह दुनियां के सुख, दुख से लिबड़े (सने) हुये हैं। जो भी महापुरूष आये, सब यही कहते हैं कि इन्सान दुखी है, दुनियां फ़ना (विनाश) का मुकाम है। सब दुनियां की चीज़े बदल रही

हैं। यह जो शरीर हमने लिया है, यह भी बदल रहा है, एकरस नहीं, बदल जाने वाला है। जो इसमें दिल लगा बैठा है, अरे भई वह कब तक सुखी रह सकता है ? सवाल तो यह है। दुनियां के काम कोई भी पूरा करके नहीं गया, हम ही पूरे हो गये, रस्ते चलते ही रहे, चलते हैं, चलते रहेंगे। मगर देखने का सवाल यह है, कि मनुष्य जीवन हमें जो मिला है, इसमें हमने करना क्या था, कर क्या रहे हैं ? सवाल तो यह है। सब महापुरूष आते हैं, हमारी तवज्जो इस तरफ दिलाते हैं कि मनुष्य जीवन भाग्य से मिला था, इसमें तुमने कुछ ऐसा सौदा करना था जो Lasting (हमेशा रहने वाला) होता, जो तेरे हमेशा ही संग और साथ रहता, मगर ऐसा सौदा तुम कर रहे हो जो तुम्हारे साथ जाने वाला नहीं है। समझे !

झूठी काया झूठी माया, झूठा यह मन जो रहा लुभाय।

यह काया भी झूठी, झूठी से मुराद एक-रस में रहने वाली, बदल जाने वाली, जिसके साथ हमेशा का संग-साथ नसीब न हो, आखिर को छोड़ना पड़े। यह माया के सामान जो हैं, जड़ या चेतन, दोनों ही बदल जाने वाले हैं।

वृक्ष का छाया स्यों मन लावे। वह विनसे यह मन पछतावे।

दरख़्त की छाया से जो दिल लगा बैठा है, अरे भई धूप बदलेगी, छाया बदल जायगी। जो उसमें दिल लगा बैठा है, आखर पछतायेगा। सवाल तो यह है। तो महापुरूष कहते हैं, भई मनुष्य जीवन मिला है। यह मन, यह भी झूठा है, यह Material है, इसका खासा है तुमको दुनियां में फंसाना। इन्द्रियों के घाट से इसको बाहरी संस्कार मिलते रहते हैं और यह दुनियां ही का रूप हमको बनाये रखता है। यह मन आत्मा से सत्ता लेता है, समझे, और आत्मा पर ही सवार है। जैसे एक दरख़्त होता है ना, अमरबेल होती है। अमरबेल की जड़ कोई नहीं होती, दरख़्त के पत्तों पर ही छा जाती है, वहीं से अपना जीवन लेती है, रस लेती है, और उसी को सुखा देती है। यह तीनों चीज़ों में जिसमें हम सब उलझ रहे हैं ना, यह सब एक-रस रहने वाले नहीं है, झूठे हैं। सच्चा क्या है ? सच्चा उसको कहते हैं, जो हमेशा रहने वाला हो, जो थोड़ी देर रहकर हमसे जुदा हो जाये या हम उससे हट जायें, वह सच्चा नहीं, हमेशा रहने वाला नहीं।

जगत असत्य है, आत्मा सत्य है। जगत असत्य से मुराद एक-रस न रहने वाला है। आत्मा नित्य रहने वाली है। जगत का ताल्लुक इस शरीर के सबब से है। शरीर भी हमेशा रहने वाला नहीं। तो जो इसके ताल्लुक रखने वाले सौदे कर गये, वह जन्म बरबाद कर गये। तो महापुरूष जो आता है वह कहता है कि ऐ भाईयों, देखो इस दुनियां में कोई भी

चीज़ तुम्हारे साथ जाने वाली नहीं है। तुम्हें कुछ ऐसा सौदा भी करना चाहिये जो तुम्हारे साथ रहे। शरीर छूट जाये तो भी। शरीर के साथ सब कुछ छूट जाता है दुनियां का सामान। वह कौनसा सौदा है ? उस तरफ तवज्जो दो।

गुरू नानक साहब के जीवन में वाकिया आया है, कि पिता ने बीस या कुछ रूपये दिये कि जाओ भई कोई बणज-ब्योपार कर आओ। गये। इतिहास यह बतलाता है कि उन्होंने रूपये, साधु फ़कीर थे, उनको खिला दिये। चले आये। उसके मुतल्लिक यह बयान किया जाता है, कि वह सच्चा सौदा करके आये। अब सच्चा सौदा किसको कहते हैं ? सवाल यही है। हम क्या समझते हैं, और सन्तों की बाणी में क्या तारीफ़ है कौन समझ सकता है ? गुरू नानक साहब के समय जो तारीफ़ सच्चे सौदे की हो सकती है जो उस वक्त थे। आज हम अपनी बुद्धि की तफ़सीरों से ख़्वाह उसके कुछ भी मायने निकाले ज्यादा मुस्तनिद (विशवस्त) नहीं। तो मनुष्य जीवन पाकर सच्चा सौदा करना, ऐसा सौदा करना है, जो हमेशा रहे, कभी फ़ना होने वाला न हो।

अरे भई नज़र मारकर देखो तो सही जो कुछ हम कर रहे हैं इनमें से कौन सी चीज़ हमेशा रहने वाली है ? कहना पड़ेगा कि यह चीजें सब ही आखर छोड़नी हैं। तो सच्चा सौदा किस बात में हुआ ? सवाल यह आता है। इसके बारे में आपके सामने एक शब्द श्री गुरू अमरदास जी साहब का रखा जायेगा। गुरू नानक साहब के बाद गुरू अंगद साहब हुये, और गुरू अंगद साहब जी के बाद गुरू अमरदास जी साहब हुये हैं। अब सच्चे सौदे की तारीफ क्या है ? वह कहां से सौदा मिल सकता है ? और उसका क्या काम है ? यह मज़मून होगा। गौर से सुनिये वह क्या फ़रमाते हैं ?

सच्चा सउदा हरि नाम है, सच्चा वापारा राम ॥

फ़रमाते हैं कि सच्चा सौदा हरि नाम का है, और उसका व्योपार भी सच्चा है। जो सच का व्योपार करें वह भी सच्चे हैं। सच किसको कहते हैं ?

आदि सचु, जुगादि सचु। है भी सचु, नानक होसी भी सचु।

जो आदि में, जुग अभी नहीं बने थे तब भी, और अब भी, और हमेशा ही रहे, उसका नाम सच है। वह कौन है ?

नानक साचे कउ सचु जान ॥

वह परमात्मा। परमात्मा की दो सूरतें हैं। एक सूरत उसकी इज़हार में आई है, एक वह सूरत है जो अभी इज़हार में नहीं आई थी। उसको अनाम या अशब्द कहते हैं।

''नमस्तंग अनामंग।''

हमारी नमस्कार है उसको, जिसका कोई नाम नहीं। जब वह इज़हार में आई ही नहीं तो नाम किसने रखा ? और किसका रखना है ? जब वह इज़हार में आया है उसको कहते हैं हरि नाम ! समझे। तो कहते हैं हरि नाम है सच्चा सौदा, हरि का नाम है। और उसका बणज ब्योपार भी करते हैं, वह सच्चा ब्योपार है। और वही सच्चा नाम है। तो कहते हैं जो यह सौदा कर गये, वह तो सच्चा सौदा है, बाकी सब झूठा सौदा है। फ़रीद साहब कहते हैं।

झूठा सौदा कर गये गोरी जाये बहे।

झूठा किसको कहते हैं। जो अटल रहने वाला न हो, बदल रहा हो। एक रस न हो। उसको लफ़्ज़ कूड़ गुरू नानक साहब ने तारीफ़ की हे।

कूड़, राजा कूड़, परजा।

बड़ा फ़ोटो खैंचा है, कूड़ या फ़ना का, झूठ का। आख़र क्या कहते हैं ?

कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विरारिया करवारू। किसु नाल की चै दोस्ती स भु जगु चलनहारू ॥

तो हम सारे हो इस झूठ के सौदे में लगे पड़े हैं, यह यहीं रह जायेगा। जिसम बनाया है, वह भी यहीं रहेगा। जायदादें बनाई तो भी यहीं रहेंगी। बड़े बाल-बच्चे, परिवार हो गये, वह सब भी यहीं रह जायेगा। बड़ी दुनियां में मशहूरी होगी तो भी यहीं की यहीं रह जायेगी। फ़ैसला यह होना है कि साथ जाने वाली चीज़ कौन सी है ?

तोशाबंधहु जिअका हेथै ओधै नालि।

ऐसा तोशा बान्धो तो तुम्हारे साथ यहां भी हमेशा रहे, और मरकर भी साथ रहे। फिर वह कौन सा सौदा है ? कहते हैं हरि नाम। हरि नाम किसको कहते हैं ?

हरि हरि उत्तम नाम है जिन सिरिआस भु कोई।

हरि का नाम बड़ा उत्तम है भई, जिसने यह सारा संसार बनाया। समझे ! इस नाम के साथ जिन्होंने बणज ब्योपार किया वह सच्चा सौदा कर गये। जो फ़ना (नाशवान) चीज़ों के साथ सारी उमर गंवा गये, वह झूठा सौदा कर गये। नतीजा क्या होगा ?

जहां आसा तहां वासा।

तो गुरू अमरदास जी साहब फरमाते हैं कि सच्चा सौदा हरि का नाम है। सच्चा सौदा भई रोटी खिलाने पिलाने का नाम नहीं। वह नेक कर्म है, ठीक। मगर वह भी फ़ना हो जाने वाला है। भगवान कृष्णजी क्या फरमाते हैं ? ''नेक और बद कर्म, दोनों ही जीव को बान्धने के लिये एक जैसे हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी।'' जब तक नेह कर्म न हो, Selfless न हो, जब तक यह जानता है मैं करनहार हूं —

जब यह जानें मैं किछु करता। तब लग गर्भ जून में फिरता।

यह अच्छा कर्म है, पित्रियान पथ है, मगर इसमें रूह आती और जाती रहती है। यह भगवान कृष्ण जी फरमाते हैं। तो कहते हैं, जो सच्चा सौदा कर गये, उस सौदे का यह फायदा है कि उसका आना-जाना खत्म हो गया।

जिन्नी नामु धिआइया गये मसकति धालि। नानक ते मुख उजले केती छुटी नाल॥

जिन्होंने नाम को धियाइया है, उनकी जीवन की मुशक्कत सफ़ल हो गई, और उनके अपने मुख मालिक की दरगाह में उजले हो गये और उसके साथ साथ उनके साथ अनेकों जीवों का उद्धार हो गया।

आप तरे सगले कुल तारे।

यह सच्चे सौदे की तारीफ़ है। अब हमने यह देखना है कि हम सौदा कौनसा कर रहे हैं ? वह कौनसा सौदा है जो तुम्हारे साथ यहां भी और आगे भी साथ रहे ? कहते हैं वह प्रभु का नाम है, नाम कहो, प्रभु का मिलना कहो, उसके साथ आत्मा का लगना कहो, रस लेना कहो, यह एक ऐसी दौलत है, न कोई इसको चोर ले जा सकता है। जिसम चला जाये, तो भी तुम्हारी आत्मा का संगी और साथी है। तो जो आत्मा का संगी और साथी से मिलने का जो Business है, व्यवहार है, यह सच्चा व्यवहार है, बाकी सब झूठ, कूड़ और फ़ना होने वाले हैं। यह गुरू अमरदास जी साहब तारीफ़ कर रहे हैं सच्चे सौदे की। आम दुनियां क्या समझ रही है ? और अनुभवी पुरूष उसे क्या समझ रहे हैं ? बात तो यही है। तो बड़े प्यार से समझाते हैं, यह सौदा कैसे मिल सकता है ? सवाल यह है। सच्चा सौदा है ना, सच्चे के साथ लगकर तुम भी सच्चे बन जाओगे। जो लातग़ैय्यर (परिवर्तनरहित) लातबद्दल (एक-रस रहने वाला) है, सत्य है, हमेशा रहने वाला है, उसके साथ जो आत्मा लग गई, वह भी अटल,लाफ़ानी हो गई। अब सवाल यह आता है कि यह सच्चा सौदा कहां से मिलता है ?

सच्चा सउदा हरि नाम है, सच्चा वापारा राम।
गुरूमति हरि नाम बणजीए, अति मोलु अफारा राम ॥

कहते हैं, इस हरि नाम का जो सच्चा सौदा है, इसको हम वणज सकते हैं। वणज से मतलब इसका व्यापार कर सकते हैं। कैसे ? कहते हैं गुरूमति द्वारा। गुरू मति की मोहताज है। यह सच्चा सौदा का जो वणज है, यह गुरू मत का मोहताज है। है तुममें, मगर तुम उससे बेख़बर हो। तो कहते हैं, फरमाते हैं, कि ''गुरू मति हर नाम बणजिये अति मोलु अफारा राम। ''बड़ी भारी यह क़ीमती वणज है, चांदी, सोने का भी वणज है, हीरे जवाहरात का भी वणज है, Platinum का भी वणज है। ब्योपार सब ही हैं, मगर यह वणज जो है, यह सबसे ज्यादा क़ीमती है। इसकी बड़ी भारी क़ीमत है। जो इसके साथ लग जाते हैं, वह भी क़ीमती बन जाते हैं। तो यह कहां और कैसे मिलता है ? कहते हैं गुरूमत द्वारा मिलता है। कहां पर है ? इसका आगे सवाल आयेगा।

नउ निधि अमृत प्रभु का नाम, देही महि इसका बिसराम।

हर एक खुशी के देने वाला प्रभु का जो नाम है, उसका बीसा इस देह के अन्तर है, तुम्हारे अन्तर है।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।

नाम वह ताकत है, जो खण्डों ब्रह्मण्डों को आधार दे रही है। उसके आधार पर यह सब कुछ हो रहा है। उसका नाम, नाम है। कहां पर उसका ताल्लुक मिलता है ? कहते हैं तुम्हारे अन्तर में है, उसी के आधार पर हमारी आत्मा इस जिसम के साथ कायम है। जब वह आधार हटा लिया जाता है, तो इस जिसम की प्रलय हो जाती है। उसी आधार पर खण्ड ब्रह्मण्ड चल रहे हैं। जब वह आधार वहां से हटा लिया जाता है, तो खण्डों ब्रह्मण्डों की प्रलय और महाप्रलय हो जाती है। वह हमारा जीवन आधार है। नाम आधार करके बयान किया है। तो कहते हैं, है तुम्हारे अन्तर। जो चीज़ जहां है, वहीं मिलेगी। हो कहीं, और तुम उसे तलाश कहीं और करो, कैसे मिलेगी ? तो उसके पाने के लिये गुरूमत चाहिये। गुरूमत किसको कहते हैं ? गुरू की मति। गुरूमत की दो तरह तारीफ़ की गई है। एक तो बाहिरी गुरूमत, एक अन्तरी गुरूमत। बाहिर गुरूमत हर एक समाज की अलेहदा है। बाहिरी रौ-रीत, शकल शवाहत, रस्म रिवाज, यह बाहिरी गुरूमत है। हर एक समाज की अपनी अपनी है। और एक है अन्तरी गुरूमत, जो गुरू बख़शता है। गुरू का झगड़ा समाजों, कौमों, मज़हबों से नहीं। वह सामाजिक गुरूओं का झगड़ा है। जो जगत गुरू आते हैं, उनकी गुरूमत एक ही होती है। वह क्या है ?

नानक एह बिध बूझो गुरूमत राम नाम लिव लाए।

कहते हैं, यह है विधि गुरूमत की, रमे हुये नाम से लिव का लग जाना जो है, यह गुरूमत सबके लिये एक सी है। जब भी महापुरूष आते हैं, तो यही गुरूमत सब को पेश करते हैं, ख़वाह वह किसी समाज में क्यों न हों। बाहिरी गुरूमत से सामाजिक जीवन बनता है, ज़मीन की तैयारी बनती है, प्रभु के पाने के लिये शौक दिलाया जाता है, और बस। अन्तरी गुरूमत से आत्मा, परमात्मा से जुड़कर, हमेशा के लिये आना जाना खत्म हो जाता है। हर एक समाज के सामने यह आदर्श है। समाजें हम लोगों ने बनाई। परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये है। आत्मा को प्रभु के साथ जोड़ना, यह एक आदर्श हर एक समाज के सामने है। दूसरे मनुष्य की जीवन यात्रा सुख से व्यतीत हो, इन्सान इन्सान के काम आये, आत्मा का प्रभु से प्यार हो। जिसका प्रभु से प्यार है, वह (प्रभु) सब में है, सबसे उसका प्यार होगा। यह है बाहिरी गुरूमत का आदर्श, जो हर एक समाज के सामने है। उसके लिये जीवन नेक, पाक और सदाचारी बने, यह है। महापुरूष जब भी आते हैं, वह यही कहते हैं हमेशा कि ऐ भाईयों, तुम्हारे जिसम पर जिस समाज की मोहर लगी है, वह उसके हवाले करो। किसी शरीयत में रहना यह एक बरकत है। नहीं रहोगे तो Corruption (भ्रष्टाचार) हो जायेगी। मगर किसी समाज में रहकर अन्तरली, असली, गुरूमत को न पावो तो मुक्ति नहीं, आना जाना बना रहेगा। ''स्वर्ग नरक फिर फिर औतार''। तो कहते हैं, यह गुरूमत का विषय है, गुरू की मति द्वारा मिलता है। यही गुरू बाणी में आता है। गुरू अर्जुन साहब ने फरमाया है।

जिस बखर को लेन तू आया।

कि ऐ भाई जिस बखर या सौदा करने के लिये तू दुनियां में आया है, मनुष्य जीवन तुझे मिला है बड़े भागों से, वह क्या है ? कहते हैं वह —

राम नाम सन्तन घर पाया ॥

वह रमा हुआ नाम है जो सन्तों के घर मिलता है। वह सच्चे व्यापारी हैं। हीरे खरीदने हों तो जौहरियों के पास जाना होगा ना, अगर लोहा खरीदना हो तो जौहरियों के पास नहीं जाना होगा। भई लोहा खरीदना है तो लोहार के पास जाओ, सोना खरीदना है तो सराफ़ के पास जाओ, अगर हीरे जवाहारात खरीदने हों तो जौहरियों के पास जाओ। अरे भई नाम का सौदा करना है तो नाम के भण्डार वाले सच्चे शाहों के पास जाओ। बड़ी मोटी बात है।

जिस बखर को लैंण तू आया। राम नाम सन्तन घर पाया॥

कहते हैं क्या करो ?

तज अभिमान लियो मन मोल।

सब मान बड़ाई छोड़कर उनसे खरीद लो भई। कहते हैं वह कहां से वह सौदा देते हैं ? कहते हैं —

राम नाम हृदय में तोल॥

वह तेरे अन्तर ही है। तुम उसके तोलने वाले बन जाते हो। हृदय आम तो सीने के पीछे गिना जाता है, मगर सन्तों का हृदय दो भ्रूमध्य है। भगवान कृष्णजी ने इसका जिकर किया है दो भ्रूमध्य, ''महाजना गुहयाम'' महाजन लोग इस गुफा में सफर करते हैं, यह (माथे पर इशारा करके) गुफा है लम्बी। तो उस सच्चे सौदे को पाने के लिये हमें क्या करना होगा ? गुरू मत धारण करनी पड़ेगी। गुरू मत क्या है ? मैंने अभी ज़िकर किया है। जो अनुभवी पुरूष के पास पहुंच गया, इस सच्चे सौदे, क्या, हरि नाम के साथ लग गया —

कोई जन हर स्यों देवे जोड़।

वह सच्चा व्यापार कर गया। वह ऐसा व्यापार है —

इथे उथे नाल।

जो तुम्हारे साथ सदा ही रहेगा, वह कभी तुमको नहीं छोड़ेगा, वह तुम्हारा जीवन आधार है, उसके साथ आत्मा जुड़ी हुई, उसका रस लेती है, उसीका रूप बन जाती है। I and my Father are one, मैं और मेरा पिता एक हैं, मेरा पिता मुझमें बैठकर काम कर रहा है। यह क्राईस्ट (यसूमसीह) ने कहा। यह अनुभव जागता है, Mouthpiece of God बन जाता है। तो ऐसे अनुभवी पुरूषों की मति को लेकर हम इस सौदे को पा सकते हैं, जो सच्चा सौदा है, कभी फ़ना होने वाला नहीं है। कहते हैं यह सौदा कैसा है ? कहते हैं बड़ा कीमती है। कोई दुनियां की चीज़ इसकी कीमत बयान कर नहीं सकती है। गुरू बाणी में आया है, नाम की महिमा के बारे में, फ़रमाते हैं —

नानक कांगद लखमणा पड़ि पड़ि कीचै भाव।

लाखों मन काग़ज, बड़ी भाव भक्ति से पढ़ते चले जाओ, दुनियां की सारी धर्मपुस्तकें मिला लोगे, सौ मन होंगी, दो सौ मन होंगी, हज़ार मन होंगी, चलो दस हज़ार मन होंगी,

कहते हैं, लाखों मन, ऐसे पढ़ो, तोते की तरह नहीं, भाव-भक्ति से पढ़ते चले जाओ —

..... मसु ताटि न आवई लेखणि पवन चलाउ

स्याही की कमी न हो और हवा की तरह और भाव भक्ति से लिखते चले जाओ, नाम महिमा, कीमत बयान करो —

भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥

कि हे प्रभु तेरे नाम की, तू इज़हार में जो आया उसकी, कीमत बयान नहीं हो सकती है, यह अनमोल रतन है।

पूरे सत्गुरू पास।

किसी अनुभवी पुरूष के हाथों में है। वह सच्चा शाह है, इसीलिये महापुरूषों को सच्चा बादशाह करके बयान किया है। दुनियां के बादशाह झूठें हैं। उस (नाम की) दौलत को पाकर मन खड़ा हो जाता है, इन्द्रियों के भोग-रस फीके पड़ जाते हैं, यह नाम की महिमा है।

गुरू हर गोबिन्द साहब थे। वह बाहर जहांगीर बादशाह के साथ सफर कर रहे थे, बाहर कैम्प लगे थे। एक उनका, एक बादशाह का कैम्प था। बड़ा खूबसूरत था। एक सिख को पता मिला कि मेरे सच्चे बादशाह आये हैं। वह घास काटने वाला था। उसने घास की बड़ी भारी गठरी बान्ध ली सिर पर, देखा सच्चे बादशाह आये हैं चलो उनको नज़र करें, उनको साथ घोड़े होंगे। दूर से देखा कैम्प लगे हुये थे, एक, बहुत खूबसूरत था। दूसरा मामूली दर्जे का होगा। तो सिख में कुदरतली ख्याल है कि मेरे सच्चे बादशाह का कैम्प सबसे आला हो सकता है। निशाना बांध लिया। बादशाह का जो कैम्प था बड़ा आला, उस तरफ और आंखें बन्द करके चल पड़े। उस रास्ते में आये, जब कैम्प के पास पहुंचे तो बाहर चौकीदार खड़े थे। कहने लगे, किधर जाते हो भई ? कहने लगे मैंने सच्चे बादशाह से मिलना है। वह कहने लगे नहीं जा सकते बगैर इजाज़त के। वह कहता है, मैंने ज़रूर जाना है। सिख को दावा होता है ना गुरू पर, मैंने ज़रूर जाना है। कशमकश की आवाज़ बादशाह के कान में पड़ी। कहने लगे क्या बात है भई ? कहने लगे जी एक सिख आना चाहता है। कहा आने दो। वह घास की जो बड़ी गठड़ी थी रख दी। आंखें बन्द हैं। कहता है, हे सच्चे बादशाह, मैं मन के हाथों बड़ा तंग हूं, मुझे इससे छुड़ा लेना, हे सच्चे बादशाह ! मैं जन्म मरण से दुखी हूं। मुझे जन्म मरण के चक्कर से छुड़ा लेना। बादशाह कहने लगा भई तेरा सच्चा बादशाह उधर है। मैं तो झूठा बादशाह हूं। बादशाह इस दुनियां की दौलत

दे सकते हैं। जो सच्चे बादशाह हैं वह तुमको वह दौलत देते हैं जो कभी फ़ना होने में नहीं आती है। तो सच्चे सौदे की तारीफ़ हमेशा ही बयान की जाती है। गुरू अमरदास जी साहब की यह तारीफ़ है कि सच्चा सौदा किसको कहते हैं ? जिनकी नज़र खुलती है, सच्चे सौदे की तरफ़, उसको पाकर उस आनंद को पाते हैं, वह कहते हैं अरे भाई दुनियां के लोगों —

झूठा सौदा कर गये, गोरी जाये वहे।

फ़ना का सौदा कर रहे हो —

जहां आसा तहां बासा।

बार-बार दुनियां में आवोगे। सच्चा सौदा करो जो —

निभे इथे उथे नाल।

जो हमारे साथ हमेशा ही रहे, तो अब यह मालूम हुआ कि सच्चा सौदा किसको कहते हैं ? वह कैसे मिल सकता है ? उसकी क्या क़ीमत है ? सच्चा सौदा वह परमात्मा इज़हार में आई ताक़त है जिसको नाम कहते हैं, उसका बणज व्यापार करना यह सच्चा सौदा है। कहां है वह ? आगे ज़िकर आयेगा। फ़िलहाल यह है कि मिलता कैसे है ? कहते हैं, गुरूमत से मिलता है ? इसकी क्या क़ीमत है ? कहते हैं इसकी सारी दुनियां की धर्म पुस्तकें भी गा-गाकर, इस सौदे की महिमा गाती रहीं, मगर उसकी महिमा गा नहीं सकीं।

कथनी कथी न आवें तोटि। कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि॥

करोड़ों ही उसको बयान कर करके चले गये मगर वह बयान मैं नहीं आ सका है। यह है भई सच्चा सौदा जो गुरू नानक साहब के वक्त हुआ। गुरू अमरदास जी साहब उसकी तारीफ़ कर रहे हैं।

सचा सउदा हरिनाम है सचा वापारा राम, गुरूमती हरिनाम बण जीए अति मोल अफारा राम। अति मोलू अफारा सचि वापारि लबे बढ़ भागी।

कहते हैं इसकी कोई कीमत नहीं पड़ सकती, अति अमोल अपारा, इसकी कोई कीमत नहीं पड़ सकती। कहते हैं इस सच्चे व्यापार के साथ कौन लगते हैं ? जिनके बड़े ऊंचे भाग हों, मनुष्य जीवन पाकर जो इस सौदे, सच्चे सौदे को पा गये वह बड़े भागों वाले हैं।

नाम किसको मिलता है ?

धुरि करमि पांइया तुव जिन कउ सिनमि हरि के लागे।

कि हे प्रभु जिसको तू आप धुर से आप दया करे वह नाम के साथ लगते हैं, इस सच्चे सौदे के साथ।

कहै नानक तह सुखु होआ, तितु धरि अनहद बाजे ॥

क्या नतीजा होगा ? सुख और शान्ति को पा जाओगे। दुनियां सारी ही दुखी है। क्यों ? झूठे सौदों में लगी पड़ी है। समझे,

नानक दुखिया सब संसार।

फिर बताते हैं सुखी होने का उपाय –

सो सुखिया जिस नाम आधार ॥

जिसको नाम का आधार मिला वह सुखी, बाकी सब दुखी। आत्मा चेतन, परमात्मा परिपूर्ण महाचेतन प्रभु। चेतन को सुख महाचेतन की गोद ही में जाकर हो सकता है। इसलिये कहते हैं कि इससे क्या होता है ? हमेशा के सुख को पा जाते हैं। कहते हैं उसकी कोई निशानी ? कहते हैं ''तित, घर अनहद बाजे'' उसके घर में अनहद की ध्वनि जाग उठती है। यह उसके इज़हार की सूरत है। मार्ग जारी हो जाता है। समझे ! यह है निशानी उसके इज़हार की। जिसको श्रुति कहते हैं, उद्गीत कहते हैं। उपनिषदों ने कहा, उधर का राग, जिसको नाद करके बयान किया है। नाद से चौदह भवन बने हैं। जिसको आकाशवाणी करके कहा है, प्रणव की ध्वनि करके कहा है। मुसलमान फकीरों ने कलामे कदीम करके कहा है, बांगे आसमानी करके कहा है। कलमा से चौदह तबक बने हैं। ऋग्वेद में इसको वाक-सिद्धि करके बयान किया है। अरे भई सब महापुरूष इसकी महिमा गाते रहे। जो इसका सौदा कर गये, उनका जन्म सफल हो गया। यह सौदा तुम कब कर सकते हो ? केवल मनुष्य जीवन में ही कर सकते हो, और किसी में नहीं। मनुष्य जीवन बड़े भागों से मिलता है।

जे बड़ भाग होवहि बड़ भागी ता हरि हरि, नाम धिआवे।

बड़े ऊंचे भाग जागे, मनुष्य जीवन मिले और ऊँचे भाग जागे तो आत्मा प्रभु से मिले, नाम के साथ धियाने वाला बन जाये। तो यह तारीफ़ गुरू अमरदास जी साहब कर रहे

हैं। यह पता लग गया कि इसकी, नाम की, कोई क़ीमत नहीं है। यह भी पता मिला कि यह गुरू मत द्वारा मिलता है। समझे ! कहते हैं इसका जो बणज व्यापार करने वाले हैं, वह सच के साथ लगकर, वह भी सच का स्वरूप हो जाते हैं, सत्गुरू बन जाते हैं।

सत्गुरू सत् स्वरूप है।

जो यह सौदा कर गये वह तो जन्म सफल कर गये। जो इससे झूठ और सौदा कर गये वह झूठे सौदों में फंसे रहे। आखिर बार बार दुनियां में आते रहेंगे। कहते हैं इस सच्चे सौदे के साथ कौन लग सकता है ? कहते हैं बड़े भागों वाले। समझे ! उसकी निशानी ? कहते हैं उसमें अनहद की ध्वनि हो रही है। कितनी साफगोई है ? कोई शक की गुन्जायश नहीं है। तो यह नाम का धियाना कहो, इस श्रुति मार्ग के साथ लगना कहो, यह है सच्चा सौदा। इसमें कीर्तन हो रहा है।

राम नाम कीरतन रत्न वथु हरि साधु पास रखीगै।

रमे हुये नाम में कीर्तन हो रहा है, इसकी रतनों जैसी पूंजी हरि ने साधु के पास रखी है। गीता में भी इसका ज़िकर आता है। सतत् कीर्तन करके बयान किया है। सतत ऐसा कीर्तन जो लगातार हो। कहते हैं, सत्गुरू से पूछो भई, सच्ची भक्ति कौन सी है, जिससे जन्म मरण खत्म हो सकता है। बाहिर की भक्तियों से ज़मीन की तैयारी बनेगी। मुक्ति सच्चे नाम की भक्ति से होगी। तो कहते हैं साचे नाम के साथ लिव लग जाने से अन्तर बाहर उसी नशे में रहता है। यह है सच्ची भक्ति, यह है सच्चा सौदा। मिलता गुरूमत से है। अब वह कहां है ? इसका आगे जिकर आयेगा। किसी महापुरूष की बाणी लो, सब यही कहते हैं। मौलाना रूम साहब ने बतलाया है कि यह कलमा जिससे चौदह तबक बने हैं, जो कलामे कदीम हो रही है, कहते हैं अफसोस —

हैफ़ दर बन्दे जिस्म दरमानी। निशनवी आं सौते पाके रहमानी॥

अफ़सोस है तुम जिसम के बन्धन में बन्ध रहे हो, इसका रूप बन रहे हो। वह प्रभु की पाक आवाज तुम्हारे अन्तर में आ रही है, उसको तुम सुन सकते नहीं। तो उसको पाने के लिये इसी को कहा कलमा, इसी से सब दुनियां बनी है। तो कलमे की तारीफ क्या की ? मैं पाकिस्तान में गया। मैंने उनको कहा, भई कलमे से चौदह तबक बने हैं, यह कुरानशरीफ में लिखा है। कलमा तो अक्षर नहीं है। ''ला इलाह इल्लिलाह।'' नहीं है सिवा रब के,

और कुछ, जो चीज है वह कलमा है। उसके लिये कोई रसूल चाहिये, वसीला चाहिये। तो अक्षर नहीं कलमा। अक्षर जिसको बोध करा रहे हैं, वह कलमा है। वह सबके बनाने वाला है। मौलवी रूम साहब ने इसकी तारीफ़ की। वह कहते हैं —

ऐ ख़ुदा बिनुमां मारा आं मुकान।

ऐ खुदा हमें वह मुक़ाम बतलाओ —

कन्दरो बेहरफ मी रोयद कलाम ॥

जहां बगैर हरफ़ों के कलमा उग रहा है, यह अक्षरों का, लफ़्जों का, बाहरी बयानों का, मज़मून नहीं। जिसके आधार पर यह सब कुछ चल रहा है, जिसको बोध कराने के लिये अनेकों ग्रन्थ पोथियां लिखी गई, अनेकों नाम रचे गये उसके बोध कराने के लिये, वह सबका आधार है। तो यह है पहला कदम जहां से हमने चलना है उस सच्चे सौदे के पाने के लिये, जिसको पाकर मनुष्य जीवन सफल हो जाता है।

अन्तरि बाहिर भगति राते, सचि नामि तिव लागी।
नदरि करे सोई सचु पाएं गुरू के सबदि वीचारा ॥

तो फरमाते हैं कि किसको मिलता है यह सच्चा सौदा ? कहते हैं ''नदर करे तां'' उस मालिक की नजर पर है —

धुरि करमि पाइया तुव जिन कउ सिनामि हरि कै लागे।

कहते हैं। ''नदरि करे सोई सच पाए'' यह Truth है भई, सच्चाई है। सच किसको कहते हैं ? फिर वही अर्ज़ है जो पहले की गई है।

नानक साचे को सच जान।

अदि सचु, जुगादि सचु, है भी सचु, नानक होसी भी सचु ॥

यह है सच। इस साचे को कौन पा सकता है ? कहते हैं कि जिसको मालिक दया करे। कैसे ? ''गुरू के सबदि बिचारा'' गुरू के शब्द के विचार करने से, गुरू द्वारे जो शब्द मिलता है। शब्द दो किसम के हैं, एक बाहरी शब्द, यह बातें करना, गाना-बजाना, यह भी शब्द है। यह शब्द तुमको दुनियां में फंसा रहे हैं। एक और शब्द है।

एक सबद, गुरू देव का।

जो गुरू द्वारे मिलता है। जो गुरू द्वारे शब्द मिलता है, उसके विचार करने से तुम सच्ची

भक्ति कहो, सच्चे सौदे को पा जाते हो। किसको यह मिलता है ? जिसको मालिक दया करे। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि साचे को पाने के लिये गुरू के शब्द का विचार चाहिये। वह शब्द क्या है ? उसकी तारीफ की। क्या की ?

शब्द धरती शब्द आकास शब्दो शब्द भया परगास।
सगली सृष्टि शब्द के पाछे नानक शब्द घटो घट आछे ॥

यह सब कुछ जिससे बना है, वह शब्द है। उसका इज़हार है। वह परमात्मा अशब्द है। जब Into Being, इज़हार में आया उसको कहा है शब्द। यह सब कुछ उसके आधार पर बना है। पहले शब्द था, पीछे दुनियां बनी। कहां उसका Contact (परिचय) मिलता है ? कहते हैं घट घट में है। बस। बड़ी साफ बात है। फिर और तारीफ़ की —

उत्पत्ति परलउ सबदे होवै। सबदे ही फिर ओपति होवै।

उत्पत्ति सृष्टि की और प्रलय जिस ताकत के आधार पर हो रही है, फिर नये सिरे से दुनियां फिर बनती है, उस ताकत का नाम, शब्द करके बयान किया है। कैसे उसकी समझ बूझ आती है ? जब गुरू द्वारे Contact मिले तो। शब्द कहो, नाम कहो, सच कहो, उसके साथ लगना, यह सच्चा व्यवहार है, सच्चा सौदा है। जो यह सौदा कर गये उनका आना जाना खत्म हो गया। मनुष्य जीवन पाना सफल हो गया। जो इसको छोड़ कर और सौदों में लगे रहे, मन इन्द्रियों के घाट पर बाहिरी सामानों के सारी उमर करते रहे, वह झूठा सौदा कर गये, जाते हुये पछताते चले गये, जीवन बरबाद कर गये।

पौड़ी छुटकी फिरि हाथ न आवै, अहिला जनम गवाइया।

कहते हैं यह है सच्चा सौदा। भाईयों करो। मनुष्य जीवन भागों से मिला है। इसी में तुम यह सच्चा सौदा कर सकते हो, और किसी में नहीं।

नानक नामि रते तिनां सदा सुख पाइया साचे के वापारा राम

कहते हैं जो नाम में रत गये, वह हमेशा के सुख को पा गये। आत्मा चेतन महाचेतन प्रभु से मिलकर हमेशा के सुख को पा गई, लाफ़ानी हो गई, यह सत् का रूप बन गई, और उसका नतीजा क्या हुआ ? ''साचे के ब्यापारा राम।'' जिसने उस सच का व्यापार किया उनकी भी गति हो गई। तो अब आप समझ गये कि सच्चा व्यापार क्या है ? सच्चा सौदा क्या है ? कैसे मिलता है ? उसके मिलने से क्या मिलता है ? अब सवाल रहा कि यह सौदा है कहां ? हम उससे क्यों दूर पड़े हैं ? इस बात का आगे निर्णय होगा। आप गौर से

सुनिये।

हुंड मैं माया मेलु है माइया मै मरीजै राम।

कहते हैं इस सौदे को ना पाने का मूल कारण हौंमैं है, दूसरा है माया। माया किसको कहते हैं ? और हौंमैं किसको कहते हैं ? हौंमैं जो हम समझते हैं ना, मैं करन हार हूं, मैं कर्ता हूं, यह जो ख्याल है दृढ़ता बनी हुई, मैं-पना जिसमें कायम हो चुका है भूल के सबब से। यह आत्मा देहधारी था। यह देह का रूप बन गया। तीन किसम के जिसम हैं जो कि हमको मिले हैं। एक स्थूल, दूसरा सूक्षम, तीसरा कारण। स्थूल देह से ऊपर आकर स्थूल हौंमैं जाती है। सूक्षम देह से ऊपर आकर सूक्षम हौंमैं जाती रहती है, देहध्यास जिसको कहते हैं। कारण देह के ऊपर जाकर कारण देहध्यास उड़ जाता है। वह Real I-Hood जिसके आधार पर यह सब कुछ चल रहा है, हमारी आत्मा इसके साथ कायम है उसमें जाग उठता है। वह कहता है वह कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। वहां जाकर हौंमैं खत्म हो जाती है —

जमिया हउ विच मुआ हउ विच।

गुरूनानक साहब ने बड़ा अच्छा फोटो खैंचा है। फिर हौंमैं की तारीफ़ करते हुये कहते हैं —

हउमैं दीरधु रोगु है दारू भी इस माहि ॥

हौंमैं बड़ी ला-इलाज बीमारी है हौंमैं जो है यह रोग बड़ा जबरदस्त है जिसका कोई इलाज नहीं। मगर प्रभु ने इसका इलाज इसके साथ ही रख दिया है। पहाड़ों में जाओ ना, वहां एक बिच्छू बूटी होती है। उसको हाथ लगाओ तो ऐसा मालूम होता है जैसे बिच्छू लड़ गया हो। साथ ही एक और साग होता है, उसको लगाओ तो वह (दर्द) जाता रहता है। जहां कुदरत ने एक चीज़ बनाई है साथ उसका इलाज भी बनाया है। कहते हैं वह क्या है ?

किरपा करे जे आपणीं ता गुरू का सबदु कमाए।

जो मालिक दया करे तो इसका, हौंमैं का इलाज है, गुरू का शब्द। गुरू के शब्द की मैंने अभी तारीफ की थी। साधु कई किसम के हैं। कबीर साहब से पूछा गया कि महाराज कौन से साधु आपको प्यारे हैं ? तो फ़रमाने लगे —

साध हमारे सब बड़े अपनी अपनी ठौर।

साधु सारे ही हमारे दिल में इज्ज़त रखते हैं, अपने अपने ठिकाने पर, मगर, ''शब्द

पारखू जो होये वह माथे सिर मौर।'' जो शब्द के परखने वाले हैं, शब्द के साथ लगने वाले हैं, वह हमारे सिर माथे पर। तो शब्दमार्गी, शब्दनिष्ठ और शब्द श्रोत्री के पास जाकर इस शब्द की समझ आयेगी। वह जोड़ सकता है —

कोई जन हर स्यों देवे जोड़।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि इस सच्चे सौदे से हम दूर कैसे पड़ गये ? कहते हैं कि दो कारण हैं, एक हौंमैं देह-ध्यास, उस Real I-Hood में जागे नहीं जिसके आधार पर यह, सब कुछ हो रहा है —

मेरा किया कछू न होय, करि है रामु होई है सोई

जो Conscious Co-worker of the Divine Plan नहीं बने, पहला कारण, दूसरा कारण है माया —

यह शरीर मूल है माया।

इस शरीर से ही भूल की बुनियाद शुरू होती है, मूल शुरू होता है। यह शरीर धारी है, शरीर का रूप बन गया, शरीर के Level से दुनियां को देख रहा है। बड़ी भारी भूल में जा रहा है। जिसम बदल रहा है। आत्मा सत्य है, जगत असत्य है। फिर सारा जगत क्योंकि जिसम का रूप बना बैठा है इसको सत्य ही भास रहा है। कब होश आती है ? जब अन्त समय आता है। गुरू अमरदास जी साहब ने इसकी तारीफ़ फ़रमाई कि माया नाम है भूल का। यह कहां पर है ? कहते हैं सारे जग को लिपटी पड़ी है,

मायइया होई नागनी जगति रही लपटाई। इसकी सेवा जो करे तिसही को फिरि खाई॥

माया जगत के अन्दर लिपटी पड़ी है। यह नागनी है नागनी। नागनी का यह कायदा है, क्या ? अपने बच्चों को पैदा करके कुन्डली मारकर आप ही खाने लग जाती है। कोई भाग जाते हैं। जो माया के सेवने वाले हैं, इस भूल में जाने वाले हैं, वही इस जीवन को बरबाद कर लेते हैं। कहते हैं फिर इससे निकला कैसे जाये ? कहते हैं —

गुरमुखि कोई गारडू तिनि मलिदलि लाई पाई।

कोई गुरूमुख इसको अपने पावों तले रौन्दता है, माया को, इस भूल को। गुरूमुख किसको कहते हैं ? गुरू अमरदास जी साहब तारीफ़ फ़रमाते हैं, ''जो गुरू सेती सन्मुख हो।'' जो किसी अनुभवी पुरूष के सन्मुख बैठा हो,

सत्गुरू देखिया दीक्षा लीनी । गत मित पाई अन्तरगत चीन्ही ॥

आंखें चार हुई हों, Life से Life आयी है । यह जो Life है, जीवन का उभार है, यह जीवन से आयेगा, ग्रन्थों पोथियों में इसका केवल ज़िकर है, ज़िकर ।

महा पवित्र साधु का संग । जिस भेटत लागे हरि रंग ॥

हरि का नशा आ जाये जिसके भेंट करने से, इस नशे को पाने के लिये हम साधुओं की संगत करते हैं । बस । तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, कि यह दो, हौंमैं और माया, यह मूल है भूल का । तो माया भूल का नाम है । किसको यह नहीं वापरती (बहकाती) ? जो गुरूमुख बन गया, वह इसको मल दल कर अपने पावों के नीचे लताड़ देता है । बाकी सब इसके बस में हैं, सबको यह खा रही है । तो मैं अर्ज़ कर रहा था कि माया और हौंमैं दो चीज़ें हैं, जिसके कारण हम उस सच्चे सौदे से जो हरि नाम का है, उससे दूर पड़े हैं । माया से पूछा गया है कि भई तेरे अगले सिर के बाल भी नहीं, और पिछली तरफ भी तेरे बाल नहीं यह क्या हुआ इनको ? तो कहने लगी भई पिछले बाल तो दुनियादारों ने खैंच खैंचकर खोस लिये, अगले बाल महापुरूषों के चरणों में जाती हूं, वह कबूल नहीं करते । माथे रगड़ रगड़ कर उड़ गये । तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि हउमैं मोया मैलु है, ''माइआ मैलु भरीजै राम'' । दिनों दिन और भूल में जा रहे हैं, और मैलें इसी भूल में इकट्ठी हो रही हैं । यह कारण है वह सच्चा सौदा जो घट घट में है, उससे हम दूर पड़े हैं, यानी बड़ी फिलसफी जो है खोल खोलकर बयान करते हैं । हम कहते हैं यह अनपढ़ों की बाणी है । भई अनुभवी पुरूषों की यह बाणी है । इल्म का जो Source है उसके वह मालिक होते हैं, इसलिये जो बयान करते हैं, बड़े Systematic Way में बड़ा खोल खोलकर वाज़ेह (स्पष्ट) तौर से पेश कर रहे हैं ।

हउमैं माइआ मैल है, माइआ मेलु भरीजै राम ।
गुरूमती मनु निरमला रसना हरिरसु पीजै राम ॥

तो मन माया में भूल रहा है । इससे आलायशें (मैल) इस भूल के कारण इन्द्रियों घाट पर बैठे रहने के सबब से, यह मैल से दिनों दिन भरा जा रहा है । तो इस मैल को दूर करने के लिये इलाज क्या है ? फरमाते हैं गुरूमति, गुरू की मति द्वारा, गुरू मत की मैंने अभी अर्ज़ की थी तारीफ़ ।

नानक एह विध बूझो गुरूमत राम नाम लिय लाये ।

रमे हुये नाम में जिसकी लिव लग गई यह है गुरूमत असली, जो सब संसार के लिये

एक जैसी है, ख़्वाहे वह किसी समाज में हो। इसी गुरूमत से मुक्ति है। तो कहते हैं गुरूमत के पाने से यह जो है ना मन, निर्मल हो सकता है। मन किससे निर्मल होगा ? गुरू नानक साहब ने इस की बहुत सारी खोल खोलकर तारीफ़ फ़रमाई है जपजी साहब में मिसालें दे देकर।

भरिऐ हथु पैरू तनु देह। पानी धोतै उतरसु खेह ॥

जब हाथ और पाँव मिट्टी से भर जायें तो पानी से साफ़ हो सकते हैं।

मूत पलीती कपडु होई। दे साबून लइये ओहु धोई ॥

अगर पैशाब और गन्दगी से कपड़ा भर जाये, तो साबुन से साफ हो जाता है। आगे फरमाते हैं।

भरिए मत पापों के संगि। ओहु धोपै नावे के रंगि।

अगर मति पापों से भर जाये, वह नाम की रंगन से धोई जायेगी। गुरू अमरदास जी साहब ने फरमाया —

मनि मैलै समु किछु मैला तनि धोतै मनु इच्छा न होई।

जिसका मन मैला है, उसका सब कुछ मैला है। बाहिरी तन की सफाई से मन की मैल नहीं जा सकती है, आगे क्या फ़रमाते हैं ?

एह जगतु भरमि भुलाइया बिरला बूझै कोइ।

यह जगत भूल में जा रहा है। बाहर की सफ़ाइयों में लग रहा है, इसके अन्तर जो इन्द्रियों के भोगों-रसों की गलाज़त भरी पड़ी है, मन आलायशों में रंगा पड़ा है, उसकी तरफ तवज्जो नहीं दे रहा है। तो अब उसका इलाज क्या है ? फ़रमाते हैं।

मन मेरे तू जपि एको नामु। सतगुरि दिया मोकउ एहु निधान ॥

अरे भई उसका इलाज केवल नाम है। कहां से मिलता है ? कहते हैं, सतगुरू ने मुझे यह खज़ाना बख़्शा है तो नाम मिला। वही बात जो पहले पेश की है, वही पेश कर रहे हैं। तो मन क्योंकि इन्द्रियों के भोगों रसों में रंगा पड़ा है, और हमारी आत्मा मन का रूप बनी बैठी है। अरे भई जिस आत्मा की यह गति है, वह प्रभु की गोद में कैसे जा सकती है ? सवाल यह है। गुरू नानक साहब ने फ़रमाया।

इहु तनु माइया पाहिआ पियारे लीतड़ा लबि रंगाए।

यह तन माया में रंगा पड़ा है, माया भूल का नाम है।

यह शरीर मूल है माया।

''शरीर मूल है माया'' यह देहधारी है, देह का रूप बन गया, यही माया है। जिस मकान की बुनियाद टेढ़ी रख दी जाये, कितनी ही उस पर मन्जिलें चढ़ाओ, वह टेढ़ी ही जायेंगी।

इहू तनु माइया पाहिआ पियारे लीतड़ा लबि रंगाए।

और इसको इन्द्रियों के रसों भोगों में रंगा जा रहा है, यह तन जो है।

मेरे कन्त न भावै चोलड़पियारे किउ धन सेजै जापरा ॥

कहते हैं मेरे प्रभु को ऐसी रूह जिसने ऐसा चोला पहन रखा है, वह भांति नहीं। वह प्रभु की सेज पर कैसे जा सकती है ? तो गुरू अमरदास जी साहब बड़ा खोल-खोलकर बयान कर रहे हैं कि, ''गुरूमति मनु निरमला रसना हरि रस पीजे राम''। हरि-रस को पा सकती है रसना, कब ? जब जब गुरू मत मिले। गुरू मत यही है नाम के साथ लिव लगना। यही सच्चा सौदा है जिसको पाकर जन्म मरण खत्म हो सकता है।

रसना हरि रसु पीजै अंतरू भीजै साच सबदि बिचारी।

कहते हैं रसना हरि रस को पाकर अन्तर से इन्सान रत जाता है, उस मस्ती में रंग जाता है, रसा जाता है, इस नशे को पा जाता है। और कैसे मिलता है ? फिर वही कहते हैं, ''साचा सबदि बीचारी।'' सच शब्द, ऐसा शब्द जो सच्चा है। सबद और शब्द एक ही मायनों में बरता है एक वह शब्द है जो फना हो जाने वाला है। एक शब्द है जो हमेशा रहने वाला है। तो हमेशा रहने वाला जो शब्द है उसके विचार करने से इन्सान एक नशे को पा जाता है, हरि, Water of Life अर्थात् ज़िन्दगी के पानी को पा जाता है, जिसको पीकर सब प्यासें बुझ जाती हैं, खत्म हो जाती हैं।

नाम मिलिये मन तृप्तिये।

और —

अंतरि खूइटा अमृति भरिआ, सबदे काढ पिए पनिहारी।

अब सवाल यह आता है यह सच्चा सौदा कहां पर है ? इसका क्या खासा (गुण) है ?

यह अगर जीवन देने वाला है, यह अमृत का रूप है, अमर कर देने वाला। किसको कहते हैं ? अमृत जो अमर कर दे। दुनियां इस तलाश में रही मगर कहीं नहीं पाया। इशारे आये हैं जगह जगह। सिकन्दर बादशाह को एक अन्धेरी जगह में ले गये। वहां आबे-हैंवां मिला, मगर सिकन्दर बादशाह उसको पी न सका। अरे भई वह अमृत का सरोवर कहां पर है कहते हैं, अन्धेरे के पीछे है। आंखें बन्द करो तो अन्धेरा ही है ना।

इस परदाये स्याह के जरा पार देखना।

तो इस अन्धेरे से Penetrate करना पड़ता है (पार जाना पड़ता है) बहुत लोग उसको तलाश कर करके हार जाते हैं, वह अमृत, इसको आबे-हैवां भी कहते हैं, इसको वेदों में सोमरस करके बयान किया है। यसू मसीह साहब ने भी थोड़ा ज़िकर किया। ज़िकर आता है उनको जीवन में कि एक कुवें पर गये। प्यास लगी थी। एक सुमेरिया की स्त्री थी, वह घड़ा भरकर पानी लिये जा रही थी। उसको कहा भई पानी पिला दे, मुझे प्यास लगी है। Inferiority Complex (हीन भाव) होता है। आपको पता हो एक चौथे पौड़े वाले को (अछूत जाति को) कहो भई पानी पिला दो, वह घबराता है। वह घबराई कि यह क्या कहते हैं ? मैं Samaritan Lady हूं जिसको लोग ज़लील समझते हैं, यह पानी पीना चाहते हैं। उसने कहा नहीं नहीं। घबराई तो उन्होंने क्या किया, घड़े को उलटा और पानी पी लिया। कहने लगे देख बीबी तुमने मुझे यह पानी पिलाया है, मेरी प्यास बुझाई है, तुम मेरे पास आओ, मैं तुझको वह पानी पिलाऊंगा जिससे सारी दुनियां की प्यासे खत्म हो जायेंगी Water of Life तो कहते हैं यह अमृत कहां पर है ? यह नाम जो है कहां पर है ?

अन्तार खूइटा अमृत भरिआ।

यह तुम्हारे अन्तर में है। अन्तर खूइटा-खूइटा कहते हैं कुंवे को। कुंवा है तुम्हारे अन्तर में, उलटा कुवां लगा है। कुवें का तो मुंह ऊपर आता है, इस कुवें का मुंह नीचे है।

उलटा कुवां गगन में।

गगन में उलटा कुवां लगा पड़ा है। इसमें क्या है ? कहते हैं, उसमें यहां पर (माथे पर इशारा करके) ज़िकर करते हैं, ''अमृत भरिया'' अमृत कहते हैं अमीं रस को —

पी ले प्याला हो मतवाला नाम अमीं रस का पीले।

प्याला नाम, अमीं रस का है। यह अमर करने वाला है। बड़ा भारी महारस है। नाम में महारस लिखा है।

बिखै बन फीका त्याग री सखिये। नाम महारस पियो ॥

विषय विकारों, इन्द्रियों के भोगों रसों का जो रस है, यह फीका है भई, तू नाम के महारस को पी।

बिन रस चाखे बुड गई सग़ली सुखी ना होवत जीयो।

जब तक इस महारस को नहीं पाते यह जीवन सुखी नहीं हो सकता।

नानक दुखिया सब संसार। सो सुखिया जिस नाम आधार ॥

नाम कहो, सच कहो, शब्द कहो, अमृत कहो, एक ही मायनों में बरता गया है गुरू बाणी में। अब कहते हैं, यह अमृत का सरोबर कहां है ? कहते हैं तुम्हारे अन्तर में है। इसका कुवां तुम्हारे अन्तर लगा है। अमृत से भरा पड़ा है। पिया कैसे जा सकता है ? कहते हैं, ''सबदे काढ पिये पनिहारी।'' पानी खैंचा जाता है ना, पनिहारी कहते है पानी खैंचने वाली को, कुवें से, इस कुवें से, कोई पनिहारी रूह इसके पानी को निकालकर पी सकती है। वह कैसा है ? कहते हैं, उसके पीने से हमेशा के लिये इसकी भूखें प्यासे मिट जाती है। तो यह अमृत कहां हुआ ? तुम्हारे अन्तर में है। अमृत किसको कहते हैं ? इसके मुतल्लिक महापुरूषों ने खोल-खोलकर बयान किया है।

अंम्रितु साचा नामु है कहना कछू न जाइ।

वह जो सच्चा नाम है ना, उसका नाम अमृत है। वह बयान में नहीं आ सकता है। वह Unspoken Language and Unwritten Law है, जो लफ़्ज़ों से परे है, लफ़्ज़ उसका बोध कराते हैं, समझने बुझने के लिये रखे जाते हैं, मगर वह बयान में नहीं आता है। कहते हैं उस अमृत को पीकर क्या होगा —

पीवत हू परवानु भइया पूरै सबदि समार।

उसके पीने से प्रभु की दरगाह में परवान हो जाता है। इस अमृत के पीने से, बाहिरी अमृत भी है — गुरू साहिबों ने तैयार किया है। मालूम है उन्होंने क्या किया है, पहले खुद खालसा तैयार किया, अपनी तवज्जो देकर, फिर उनकी, पांच प्यारों को, इकट्ठा करके उसकी तवज्जो से वह अमृत तैयार किया था। खालसा वह है, जिसके अन्तर पूर्ण ज्योति का विकास हो।

पूरण ज्योति जगे घट में तो खालिस तांहि नखालिस जानो।

जो उस अमृत के सरोवर से पान कर रहा है, उसका नाम खालसा है। जिसके अन्तर

ज्योति का विकास हो चुका है, अरे भई ऐसा एक खालसा मिले हम पांव धोने को तैयार हैं। पांच मिल जायें तो क्या कहना ! उनकी तवज्जो में सब कुछ है। यह बाहरी रसमी अमृत इसका यह मतलब था, महापुरूषों ने अपनी सत्ता देकर तैयार किया था। अरे भई अन्तर का अमृत सबके अन्तर है, वह सच्चे नाम का है। फिर और खोलकर फरमाते हैं, ''अमृत हर हर नाम है।''

ऊपर लफ़्ज़ आया है ना, ''सच्चा सउदा हरि नामु है।'' याने हरि नाम ही को यह अमृत कह रहे हैं। तो कहते हैं —

अमृत हरि हरि नाम है मेरी जिन्दुड़िये। अमृत गुरू मति पाए राम ॥

गुरू मत का मोहताज है। यह आप में है, मगर मिलता नहीं। फिर क्या फ़रमते हैं —

हर का नामु अमृत जल निर्मल। पाइये गुरू यह औषध जग सारा ॥

सारे जहान की सब बीमारियों का यह वाहिद (एकमात्र) इलाज है।

सरब दोष को औषध नाम।

यही अमृत की तारीफ़ हो रही है, यही नाम की हो रही है। तो नाम क्या हुआ ?

अमृत हरि को नाम है जितु पीते तिखं जाइ।

बड़ी साफ़गोई, कहते हैं Water of Life यह कहां पर है ? Water water everywhere, Not a drop to Drink. यह हर जगह है जीवन का पानी, मगर तुमको मिलता नहीं, जो अन्धेरे में हो। आबे-हैवां अन्धेरे में है। अब अन्धेरे के पार चले तो उसको पिये।

यार दर खाना ओ मन निदे जहां मी गर्दम।

मैं जहान में, बाहर, ढूंढ रहा हूं, वह मेरे अन्तर में है।

आब दर कूजा ओ मन तिशना लबां मी गर्दम ॥

वह जो उलटा कुआ लटका पड़ा है उससे पानी आ रहा है। कहते हैं मैं प्यासा बाहर भटक रहा हूं। अब अन्तरमुख होकर पनहारी बनने के लिये किसी के सामने बैठकर गुरूमुख बनना पड़ेगा। गुरू गुरू हो। गुरू गृ धातु से निकलता है, जिसके मायने हैं शब्द। जो शब्दनिष्ठ और शब्दश्रोती हैं। वह तुमको उसके साथ जोड़ सकता है।

धुनि आने गगन ते सो मेरा गुरू देव।

यह है तारीफ़ शब्द की, नाम की। नाम क्या है ? और यह नाम कहां पर है ? इस बात का सवाल एक जगह आता है ?

नउ दरवाजे नवे दर फीके, रसु यह अंमृतु दसवे चुईजै।

नौ दरवाजे हैं इस जिसम के। दो नाक, दो कान, दो नासिका, दो आंख, मुंह, गुदा और इन्द्री। नौ दरवाजों में जो रूह भटक रही है बाहर, वह इससे खाली रह जाती है। अगर उस रस को पाना है, तो इस जिसम के अन्तर एक और दरवाजा भी है जिसको दसवां द्वार कहते हैं —

नउ दरवाजे काइआ कोटु है, दसवै गुपत रखीजै।

नौ द्वारे तो प्रगट हैं, सब देख रहे हैं। दसवां इसमें गुप्त है। उस दसवें गुप्त दरवाजे का लोगों को पता नहीं।

अन्धे दर की खबर न पाई।

यह वह दरवाजा है जो पिण्ड से अण्ड और ब्रह्मण्ड के पार जाने का Way up करने का है। Christ ने कहा है कि बहुत लोगों ने इसकी तलाश की मगर उनको यह दरवाजा नहीं मिल सका। तो कहते हैं यह अमृत कहां से मिलता है ? फरमाते हैं —

अमृत सत्गुरू चुबाया दसवें द्वार परगट हो पाया।

दसवीं गली में जाओ तो वह प्रगट होकर वह अमृत मिलता है, नाम का रस मिलता है, नाम की ज्योति का विकास होता है। समझे ! ''अन्तर खूट्टा अमृत भरिया सबदे काढ़ पिए पनिहारी। फिर कहां, ''उलटा कुवां गगन में तामें जरे चिराग।'' उसमें ज्योति का विकास है, जब इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ तो दसवीं गली खुली, खुलने पर उसमें दाखल होने पर यह अमृत तुमको मिलता है। इसलिये जो इसको छोड़कर कहीं और तलाश कर रहे हैं -

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केहि विधे आवे हाथ। कहे कबीर तब पाईये जो भेदी लीजे साथ॥

समझे ! कोई राज़दार वाकफ़ मिले वह तुमको अन्तरमुख इसके साथ जोड़ दे तब तो ठीक, नहीं तो सारी उमर भटकते रहो। ग्रन्थों पोथियों में इसका ज़िकर है, हमारे दिल में ग्रन्थों पोथियों के लिये बड़ी भारी इज्ज़त है —

उमलीक लाल एह वचन।

हीरे जवाहरात से ज्यादा कीमती है यह वचन, मगर इसमें क्या ज़िकर है, कि अमृत

तुममें है, उसको पीने से तुम्हारी प्यासें सब बुझ सकती हैं। और कोई इलाज नहीं। तो फिर आखर क्या कहते हैं ? यह कहां पर है ?

घर ही में अमृत भरपूर है, मन मुखां स्वाद न आया।

यह अमृत तुम्हारे घर में ही भरपूर है, Overflow कर रहा है, मगर जो मनमुख हैं इसको पा नहीं सकते। मनमुख किसको कहते हैं ? इसकी तारीफ भी गुरू अमरदास जी ने फ़रमाई है।

से मनमुख जो सबदु न पछांणैहि। गुर के भै की सार न जाणहि ॥

वह मनमुख हैं। कौन ? जिनको शब्द और नाम का पता नहीं है। गुरू मिला भी, मगर उसकी सार दिल में नहीं बसी। रास्ता मिला भी, कमाई नहीं की। दवाई ली, आले में रख दी, बीमारी कैसे जाये ? यह हमारे हुजूर (बाबा सावनसिंह जी महाराज) फ़रमाया करते थे। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि यह अमृत तुममें है, मगर हम कहां उसको ढूंढ रहे हैं ? बाहिर मुखी। जगह-जगह महापुरूष इस बात की तरफ तवज्जो दिलाते रहे।

सभ किछु घर महि बाहरि नाही। बाहिर टोलै सो भरम भुलाहि ॥

तो अमृत यह कहां पर है ? यह अमृत आपके अन्तर में है। जब तक जो चीज़ जहां पर है वहां न जाओ, वह चीज़ मिलती नहीं। इसलिये इसको कैसे पाना होगा ? अब अन्तर में है तो कैसे मिले ? फिर वही तारीफ़ आती है —

जो जन मर जीवे तिन अमृत पीवे।

अमृत किसको मिलता है ? वह गुरूमत के साथ लगने से मिलता है —

जो जनि मरि जीवे तिन अंमृतु पीवे। मनि लागी गुरूमत भाउ जीउ ॥

गुरूमत के भाव भक्ति के साथ लगकर जीते जी मरे, पिण्ड से ऊपर आये, इस अमृत को पाता है। तो मर जीवने का सवाल है। मर जीवना किसको कहते हैं ? जब इन्सान मरता है, तो रूह नीचे से सिमट कर आंखों के पीछे आ जाती है। नीचे चक्र टूटने पर आंखें फिर जाती हैं, वह जिन्दा है। अरे भई जीते जी यहां (आंखों के पीछे) आना होगा।

नानक जीवतिया मर रहिणे ऐसा योगु कमाईए। मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार।
ऐरी मरनी जो मरे दिन में सौ-सौ बार ॥

जब चाहे, At will (अपनी मरजी से) पिण्ड से ऊपर आकर इस अमृत को पी सकता

है। वह गगन में है, नीचे नहीं। तो सन्तों की तालीम, कहां से शुरू होती है ? यहीं से, क, ख, शुरू होती है। Where the world's philosophies end, there the religion starts, जहां दुनियां के फिलसफ़े खत्म हो जाते हैं वहां उनकी क, ख शुरू होती है। वह पहले दिन ही क्या करते हैं, कहते हैं, छोड़ो जिसम चलो ऊपर, तुम्हारी रूह की बैठक पर चलो। दो ''भ्रू-मध्य'' इशारा दिया है भगवान कृष्णजी ने गीता में, वहां आकर तुम इस अमृत को पी सकोगे। जब तक वहां नहीं पहुंचते इस अमृत से खाली रह जाओगे। तो उसको पाने के लिये क्या करना होगा ? जीते जी मरना होगा। जीते जी मरना कैसे हो सकता है ? किसी सत्स्वरूप हस्ती के मिलने से —

खैचे सुरत गुरू बलवान।

गुरू अमरदास जी साहब फरमाते हैं, अब हमारी आत्मा मन के आधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर बाहर दुनियां में फैलाव में जा रही है। अब इन्द्रियों को उलटो तो इस चीज़ को पाओगे। तो सन्तों के मार्ग को उलटा मार्ग भी कहा है —

सत्गुरू मिलिऐ उलटी भई। भाई जीवत मरे ता बूझ पाई॥

जब सत्स्वरूप हस्ती मिलती है, तो वह तुमको इन्द्रियों को उलटने का मार्ग देता है। How to invert ? (पिण्ड से ऊपर कैसे आयें ?) इसमें सहायता देके Way-up करते हैं (अन्तर रस्ता खोल देते हैं) जब रस्ता एक बार खुल गया फिर —

गुरूमुख आवे जाय निसंक।

तो यह अमृत आपके अन्तर में है। इसके पीने से ही जीव की सच्ची कल्याण है। यह सब महापुरूष कहते हैं। अब इस अमृत में क्या है ? इस अमृत की फिर तारीफ़ की है। जो नाम की तारीफ़ की है, वही अमृत की भी फिर तारीफ़ की है, कहते हैं, इस अमृत में नाम की ध्वनि है।

निरमल जोति अंमृत हरि नाम। पीवत अमर भरा निहकाम॥

उसको पीकर नेह कर्म इन्सान हो जाता है, आने जाने से छूट जाता है। फिर क्या फ़रमाते हैं ?

तैं भया परगास मिटिया अन्धियारा। ज्यूं सूरज रैण किराखी॥

जिस तरह सूरज की किरण निकलती है, प्रकाश होता है, ऐसे Light इस अमृत से निकलती है, उस Light को अदृष्ट अगोचर कहा है, यह बाहरी दृष्टि का मज़मून नहीं, अगोचर है। कैसे मिलता है ? कहते हैं —

निरंजन सो देखया गुरूमुख आखी।

अपनी आंखों से देखता है, जो गुरूमुख बनता है।

सत्गुरू मिले तां अखीं वेखे।

बड़ी साफ़ बात है, वह कौन सी आंख है ?

नानक से अंखड़ियां बेअन्न जिन दिसंदो मापरी।

ऐ नानक वह आंखें और हैं जिन से वह नज़र आता है, यह चमड़े की आंखें नहीं। कैसे खुलती हैं ? सवाल यह है। दो से कैसे आंख एक होती है ? If thine eye be single thy whole being shall be full of light. अगर तुम्हारी दो से एक आंख बन जाये तो तुम्हारे अन्तर नूर भर जाये। गुरू वह एक आंख बनाता है, वह खोलता है, दिव्य-चक्षु खोलता है। तो इस दिव्य-चक्षु के खुलने पर ही अमृत का सरोवर मिल सकता है। और इस नाम में और कुछ भी है, बहुत कुछ। इसमें ज्योति भी है, इसमें ध्वनि भी है। यह दोनों चीज़ें नाम में हैं। तो इसलिये फ़रमाते हैं —

धावतु थांमिआ सतिगुरि मिलऐ दसवां दुआरू, पाइया।

मन धावते को खड़ाकर लेता है, मन खड़ा होता है पहले। मन खड़ा हो तब काम बने, दसवीं गली में आये —

तिथे अंमृत भोजन, सहज धुनि उपजै।

वहां अमृत का भोजन जो है, क्या ? सहज की ध्वनि उपज आती है। कब ? जब आप दसवें द्वार में आते हो।

उपजै जितु सबदि जगतु ध्यहि रहा इआ।

जो सारे जगत को आधार दे रहा है। तो आप देखेंगे नाम, सवद, अमृत, सच, बाणी, सब एक ही मायनों में बरता गया है। यह अमृत का सरोवर घट-घट में ठाठे मार रहा है। मिलता किसको है ? जिसका धुर कर्म हो। कहां पर है ? कहते हैं तुम्हारे अन्तर में अमृत का सरोवर भरा पड़ा है। तुम वहां पीने की बजाये बाहिर फिर रहे हो।

अन्तर खूहटा अंमृत भरिया, सबदे काढ़ पिए पनिहारी।
जिसु नदर करे सोई सचि लागे, रसना रामु रवीजै॥

कहते हैं यह अमृत किसको मिलता है ? वह जो खूंहटा भरा पड़ा है अमृत का किसको मिलता है ? जिस पर मालिक दया करे।

धुर करमि पाइया तुधु जिन कउ, से नाभि हरि के लागे।
कहै नानक तहं सुख होआ, तितु घर अनहद बाजे ॥

अनहद की ध्वनि जाग उठती है। कलामे कदीम हो रही है, उसको यह सुनता नहीं, बाहर दुनियां में भटक रहा है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। ''जिस नदर करे सोई सचु लागे, रसना रामु रवीजै।'' उस राम के रस में रसना भीज जाती है, रस को पाकर। उसको अमृत रस मिलता है। महारस है ना —

नानक नामिरेते से निर्मल, होर हउमैं मैलु भरीजे।

कहते हैं जो नाम को पा गये इस रस को, कहते हैं उनका मन निर्मल हो गया, नहीं तो इस नाम के बगैर —

हउमै नावै नालु विरोध है, दुइ न वसहि इक ठाई।

हौंमे, देह ध्यास है तो नाम कहां है ? शब्द इसके अन्तर है, उसके साथ जो आत्मा लग गई देह-ध्यास खत्म हो, तब ही लग सकती है, दर्जे-बदर्जे उसके देखने वाला बन जाता है Conscious Co-worker of the Divine Plan बन जाता है, वह कहता है वह कर रहा है, मैं नहीं। आना जाना खत्म हो जाता है।

काठ की पुतली कहा करे बपुरी खिलावन हारो जानै।

जिसकी यह अवस्था है, देख रहा है, उसका आना जाना कहां रह जाता है ? तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि इन्सान के अन्तर यह दौलत है। अब यह कैसे मिल सकती है ? सवाल फिर आता है। दुनियां कैसे लग रही है। यह तो बताया कि यह अमृत का सरोवर कहां पर है, तो उसके लिये अब बतलाते हैं कि दुनियां के लोग क्या कर रहे हैं ? गौर से सुनिये। गुरू अमरदास जी साहब को 70-72 साल की तलाश में बहुत कुछ तजरूबा हुआ, बड़े-बड़े महात्मा, बड़े-बड़े पण्डितों के साथ, बड़े-बड़े लोगों से मिलने का इत्तिफ़ाक हुआ। जब गुरू अंगद साहब के चरणों में आये, हक़ीकत मिली कि यह चीज़ तुममें है। बाहरमुखी साधन अनेकों ही किये होंगे, जिसका ज़िकर साफ़ तौर से मालूम नहीं होता, इशारों के तौर पर आते हैं, उनकी बाणी में, उसके मुतल्लिक। अब ज़िकर करते हैं, ग़ौर से सुनिये आगे क्या फ़रमाते हैं।

पण्डित जोतकी सभी पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम।

गुरू अमरदासजी साहब फ़रमाते हैं, जितने पण्डित हैं, पढ़े लिखे आलिम फ़ाजिल हैं, ज्योतिषी हैं, सब पढ़कर बड़ी ऊँची पुकारें करते हैं। बाणीं अब पढ़ रहे हैं ना, यह शब्द

गाकर पढ़ो, गाते रहो, सारी उमर पाठ करते रहो, जिस चीज़ का ज़िकर है कि वह अमृत तुममें है, सच्चा सौदा है, मिलता गुरूद्वारे है —

नानक यह अमृत मनमांहि पाइये गुरू विचार।

गुरू द्वारे इसका Contact (परिचय) मिल सकता है, सारी उमर यह बाणी पढ़ते रहो, क्या तुम्हें वह चीज़ मिल जायेगी ? तो सवाल यह है कि दुनियां में सारी दो किसम की विद्यायें हैं। एक अपरा विद्या, एक पराविद्या। अपरा विद्या में ग्रन्थों-पोथियों, बाणियों का पढ़ना-पढ़ाना, गाना-बजाना, सब शामिल हैं, तीर्थ यात्रा वगैरा और जितने, हवन दान, यह वह करने के कर्म हैं, यह सब अपरा विद्या में शामिल है। पढ़ने से शौक बनेगा। बस। रूचि बनेगी। महापुरूष गा रहे हैं, कि यह अमृत तुममें है भई। यह मिलता गुरू के शब्द के विचार से है, दसवीं गली में जाने से मिलता है। उलटा-कुवां अमृत का भरा पड़ा है तुममें, तुम पनिहारी बनो, गुरू की मत धारण करके। यह पढ़ते रहो, गाते रहो सारी उमर तो क्या गाने से मिल जायेगा, बजाने से ? नहीं ! यह मतलब नहीं कि पढ़ो नहीं, विचारों नहीं। जो दिया है, उसको समझो ! यह अमृत कहां है जिससे अमर जीवन मिलता है ? वहां पहुंचो। आप पहुंच सकते हो तो आप पहुंच जाओ। आप नहीं पहुंच सकते तो किसी की मदद ले लो, गति तभी होगी। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि पण्डित लोग आगे पीछे पुकारते हैं, बाणियों को उच्चारते हैं, ऊंचा-ऊंचा। तुलसी साहब ने तो बड़े सखत लफ्ज़ बरते हैं इस बात के लिये। वह कहते हैं जैसे मेण्डक टर्राते हैं, वैसे यह लोग गाने गाते हैं। यही और और महापुरूषों ने बयान किया है। बुल्लेशाह क्या कहते हैं ?

क्यों पढ़ना हैं गण्ड किताबां दी। सिर चायें भार अजाबां दी॥

पढ़ लिये जो —

पढ़िये जेते बरस बरस पढ़िये जेते मास। पढ़िये जेती आरजा पढ़िये जेते सास।
नानक लेखै एक गल होर हौ मैं झखण झालवा।

जो वह बात कहते हैं उसको, बयान हो रहा है उसको, पाओ। पढ़ना यह नहीं मतलब कि ना पढ़ो। पढ़ो। विचार कर पढ़ो क्या दिया है ? उसको हासिल करो। खाली पढ़ने से मुक्ति नहीं, शौक बनेगा। पहली ज़मीन की तैयारी है। और और महापुरूषों ने भी यही कहा। स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं —

वेद सास्त्र सिमरत हर प्राना, पढ़ पढ़ सब पण्डित हारा।

सब पण्डित हार गये पढ़ पढ़कर। पढ़ते रहे, जिस चीज़ को पढ़ा था, वह नहीं मिली।

कहते हैं वह चीज़ कैसे मिल सकती है ? कहते हैं —

बिना सत्गुरू बिनस सबद सुरत कोई न उतरे भव पारा।

बस। जब तक गुरू न मिले, वह हमको शब्द के साथ, नाम के साथ जोड़े नहीं जहां वह है —

अदृष्टि अगोचर नाम अपारा। अति रस मीठा नाम प्यारा॥

तुम्हारे अन्तर में है, बाहरी दृष्टि का मज़मून नहीं, इन्द्रियों के घाट से ऊपर मिलता है। वहां जब तक तुम आते नहीं, यह चीज़ तुममें दबी हुई आती है, दबी हुई चली जाती है। जीवन बरबाद हो जाता है। यह दौलत किसके लिये है ? सबके लिये है ! सबके अन्तर मौजूद है। हमारे हुजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) फ़रमाया करते थे हिन्दू निकाल ले उसकी, मुसलमान निकाल ले उसकी, सबके अन्तर है। अन्तरमुख होना पड़ता है, Inversion कहो, इन्द्रियों से ऊपर आना कहो, Rise above the body consciousness करना कहो। यह चीज तुममें है, तभी तुम पा सकोगे अगर उलटना, इन्द्रियों से ऊपर आना सीखो —

सत्गुरू मिलिये उलटी भई भाई। जीवत मरे तां बूझ पाई॥

यह गुरूमत की मोहताज है। तो कहते हैं, खाली पढ़ पढ़कर अगर सुनायें भी तो किसको सुनायें ? तुलसी साहब ने और वाज़हे (स्पष्ट) किया है।

चार अठारह नौ पढ़े खट पढ़ खोया मूल। सुरत शब्द चीन्हे बिना ज्यों पंछी चण्डूल॥

चारों वेद, अठारहों पुराण, छह शास्त्र, नौ व्याकरण, इसमें और धर्म पुस्तकें शामिल कर लो, अगर सबके भी पढ़ने वाले, गाने वाले, बजाने वाले बन गये, जब तक सुरत, शब्द के साथ नहीं लगती जो इस वक्त इन्द्रियों के घाट पर इसका रूप बनी बैठी है, इसकी सब पढ़े पढ़ाये की कीमत क्या हैं ? कहते हैं चण्डूल पंछी की तरह है जो जैसी बोली सुनता है वैसे उच्चारण कर देता है और बस। गुरू अमर दास जी साहब ने और अच्छी मिसालें देकर समझाया है। कहते हैं जैसे हलुवे में सुबह से शाम तक कड़छी फिरती रहे, हलुवे के रस से बेखबर है, इसी तरह आलिम लोग खाली गाने-बजाने, पढ़ने-पढ़ाने, तफ़सीरें करने, Intellectual Wrestling में रह गये, जिस चीज़ को वह बयान करते हैं, उसको नहीं पाया। वह बगैर किसी सत्स्वरूप हस्ती के मिलती नहीं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। गुरू अमर दास जी साहब ने क्या पता कितने साधन, कितने पाठ किये होंगे, पण्डितों से मिल मिलकर ? क्योंकि तलाश हो तो फिर इन्सान क्या नहीं करता है ? जब गुरू अंगद

साहब के चरणों में आये हैं, हकीकत मिली है, खोल खोलकर समझा रहे हैं। पढ़ना यह मतलब नहीं कि न पढ़ो, देखो उसमें क्या दिया है। अभी यही शब्द हम पढ़ रहे हैं कि सच्चा सौदा हरि नाम का है, नाम तुम्हारे अन्तर में है, अदृष्ट और अगोचर हैं और यह गुरू मत का मोहताज है। जब मिल जाये, इसमें ज्योति का विकास है, इसमें अखण्ड कीर्तन हो रहा है। इस चीज़ को पा लो तब तो पढ़ो, ठीक हो गया ना, खाली पढ़ने से सिवाय रूचि और शौक बनने के और ज्यादा कुछ नहीं होता। यह ज़मीन की तैयारी है। तो यही गुरू अमर दास जी साहब फ़रमा रहे हैं।

माया मोह अन्तरि मल लागै, माया के वापारा राम।

कहते हैं वह माया की तारीफ़ आगे की गई कि यह भूल का नाम है, और भूल की बुनियाद कहां से शुरू होती है ? ''यह शरीर मूल है माया।'' हम थे तन धारण किये हुये, तन का रूप बन गये, इस तन के रूप से दुनियां को देख रहे हैं। कहते हैं जितना बाहरमुखी साधन करो, और तुम भूल ही में रहते हो। शौक बनता है, रूचि बनती है, चीज़ कैसे पा सकते हो ? है तुममें, मगर पा नहीं सकते। गुरूमत की मोहताज है। तो इस भाषा का व्यापार करते करते मौत आ गई —

झूठा सौदा कर गये गौरी जाये बहे।

अब फरमाते हैं —

माया के ब्यापारा जगत प्यारा, आवंण जाण दुख पाई।

कहते हैं यह माया के व्यापार में झूठ, भूल में रहते हैं।

कूड़ि कूड़ै नेहु लग्न बिसरिया करतार। किस नाल कीजै दोस्ती सब जगु चलनहारू॥

नतीजा क्या हुआ, दुनियां की मोहब्बत दिल में रही, बार बार दुनियां में आते रहे। आखिर क्या हुआ ? ''माया के ब्यापारा जगत प्यारा।'' आना जाना बना रहा, दुखी रहे, मरते रहे, पैदा होते रहे। मर मरकर फिर दुनियां में आते रहे।

जहां आसा तहां बासा।

अगर इस भूल से निकल जाते किसी अनुभवी पुरूष की कृपा से, तो इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर यह गति मिल सकती, आना जाना खत्म हो जाता, नाम के महारस को पा जाते, बाहर के रस फीके पड़ जाते।

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा।

ऐसी रूह फिर दुनियां में क्यों आयेगी ?

बिख़ु का कीड़ा बिखु सिउं लागा, बिस्टा मांहि समाई।

कहते हैं यह ज़हर का, गन्दगी का कीड़ा है। गन्दगी में पता है कीड़ा निकल कर फिर सिर गन्दगी में रख देता है, थोड़ी होश आती है, फिर उसी भूल में चला जाता है। किसी अनुभवी पुरूष के पास बैठता है तो —

साध के संग बुझे प्रभु नेड़ा।

हकीकत खुलती है, है भई कुछ चीज, फिर जाता है। वही फिर माया में, वही गंदगी में फिर फंस जाता है, भूल में चला जाता है। यह हालत दुनियां की बन रही है। जैसे पानी हो ना, उस पर काई ज़मी हो, कुछ डंडे से थोड़ा हिलाओ तो कुछ पानी नज़र आता है, डन्डा निकालो फिर वैसे ही काई जम जाती है। अनुभवी पुरूष के पास मालूम होता है, कि अब पहुंच गये प्रभु के पास। खैर आ गया नज़दीक, जब गये फिर वही जिसम की भूल में हैं, बाहिरी ताल्लुकात का रूप बने बैठे हैं।

जो धुरि लिखिआ सुकरम कमाई आ। कोई न भेटैस धुरि फुरमाइया।

इसलिये जैसे कर्म किये वैसा फल मिला। अगर कणक (गेहूं) बीजोगे तो कणक (गेहूं) काटोगे, नीम बीजोगे तो नीम काटोगे, कीकर बोवेगे तो कीकर काटोगे, अंगूर नहीं काटोगे। जैसे कर्म पिछला बनाया, वैसे प्रारब्ध बन गई, वैसे ही रूचि बन गई, मनुष्य जीवन पाकर इसकी थोड़ी आजादी है, जिससे इसने फ़ायदा उठाना था वह किसी सत् स्वरूप हस्ती से मिलकर अपने दुख को मिटाना था, वह नहीं किया, उसी रौ में जा रहा है जिसमें वह लाईनें उसने Draw की हैं। रेलवे लाईनें हैं, उनको रखते हुए पहली जिस तरफ मरजी है रख लो, जब एक बार रख दी फिर उसी से गुज़रना होगा। As you sow so shall you reap (अर्थात् जैसा बोवोगे वैसा काटोगे) समझे ! दुख सुख वैसे आते हैं, रूचि वैसे बनी है। क्यों कि बच्चा हो तो उसकी पहले ही Awakening, जागृती होती है। पिछले कर्मों का संस्कार हैं कोई यहां आकर सोहबत संगत मिलने से जागते पुरूषों की जाग उठता है। इसलिये जैसा इन्सान कर्म करता है, वैसा काटना पड़ता है।

कहते हैं मनुष्य जीवन पाकर नाम में रत गई रूह जिनकी, नाम के ध्याने वाले बन गये, वह तो हमेशा के सुख को पा गये। मूर्ख लोग पुकार पुकार कर जीवन बरबाद कर गये। बुल्लेशाह कहते हैं, यह भाई ऊंची बांगें जो तू देता है, परमात्मा कोई बेहरा थोड़ा है ? यह लोगों को बताने के लिये है। अरे भई दिल की मोहब्बत दिल में रहती है, जिसका दिल उसकी याद में रंगा गया वही जी उठा —

सो जीविया जिस मन बसिया सोय। नानक अवर न जीवे कोय ॥

यह दिल दिल की बात है भई, अन्तर की तबदीली का एक तरीका है। इसके बगैर काम नहीं बनता है। तो कहते हैं बाहिर लोग बाहरमुखी साधन कर-करके, कूक-कूक, पुकार-पुकार कर जीवन बरबाद कर जाते हैं।

जहां आसा तहां बासा।

जब तक नाम न मिले, इन्सान की कल्याण नहीं होती है। नाम तुममें है, यही अमर कर देने वाली चीज़ है, गुरूमत की मोहताज है, जब तक कोई अनुभवी पुरूष न मिले, यह दौलत दबी हुई आती है, और दबी हुई चली जाती है। मनुष्य जीवन बरबाद हो जाता है। जिसने मनुष्य जीवन पाकर यह चीज़ नहीं पाई, उसके मुतल्लिक गुरू अमरदास जी साहब क्या फ़रमाते हैं ?

धृगु धृगु खाइया धृगु धृगु सोइआ, धृगु धृगु कामड़ु अंगि चड़ाइआ ॥

खाना, पीना, सोना, इस जिसम के हार श्रृंगार बनाने ही में सारी उमर खर्च कर दी।

धृग सरीर, कुटम्ब सहित सिउ।

मनुष्य जीवन पाने पर भी, और बाल-बच्चों के, परिवारों के, पालने पर भी हजार-हजार बार लानत है।

जित हुणि खरास नु पाइया।

अगर हमारी आत्मा प्रभु से नहीं जुड़ी, जो काम हम केवल मनुष्य जीवन में ही कर सकते हैं, यह काम नहीं किया सारे काम किये, जन्म बरबाद चला गया।

पउड़ी छुड़की फिरि हाथ न आवे। अहिला जन्मु गवाइआ ॥

एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथों से निकल गई, यह जन्म बरबाद गया, फिर या नसीब कब आपको मनुष्य जीवन मिले, फिर तुम यह काम कर सको। समझे !

खसम न चीन्हे बावरी क्या करत बड़ाई।

उस मालिक को चीन्हा नहीं, ऐ इन्सान तू किस बात की बड़ाई करता है। तू कहता है मैं अशरफ़ु अलमख़लूकात (सर्वश्रेष्ठ) हूं, तेरा शरफ़ (श्रेष्ठता) इसी में था कि तू प्रभु को पाता। उसको पाया नहीं जीवन बरबाद कर गये।

बातन भक्त न होयगें छाड़ो चतुराई।

यह बात बातों का मज़मून नहीं।

यह करनी का भेद है नाहीं बुद्धि बिचार। कथनी छांड करनी करो तौ कुछ पावो सार।

बड़े प्यार से खोलकर समझा रहे हैं। हरेक चीज़ की Values (कीमत) पेश कर रहे हैं। इसका यह मतलब नहीं कि आप ग्रन्थों पोथियों को न पढ़ो। अरे भई सब मज़हबों की धर्म पुस्तकों का मुतलिआ (अध्ययन) करो, यही चीज़ सबमें मिलती है, जबांदानी अपनी है, तरजे बयान (भाषा शौली) अपना है, नफ्से मज़मून वही है। किसी अनुभवी पुरूष के मिलने से Keynote जब मिलता है, तो समझ आने लगती है कि बात क्या है, नहीं तो यह सरवस्ता राज़ (गुप्त भेद) है, समझे ! Posterity to Posterity (पुश्तों के बाद पुश्तों से) होते हुये। हम उनको खाली अदब ही से देखते हैं, उस चीज़ को नहीं समझते जो उनमें बयान की है।

पियो दादे का खोलि डिठा खजाना। ता मेरे मनि भइआ निधाना॥

यह हमारे बाप दादा के बेशकीमत खज़ाने है, इनको खोलकर देखने की ज़रूरत है, इसमें हमारे पुरातन महात्मा बोल रहे हैं। Past Gurus Speaking Through Books. अब भी किसी ऐसे महापुरूष की जरूरत है जिसने इस गति को पाया है, वह हमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर जोड़ दे उससे —

कोई जनु हरि सिउ देवें जोरि।

जो जुड़ा है, जोड़ सकता है।

माइया मोहु मनि रंगेया मोहि सुचि ना कोई राम।

कहते हैं माया, भूल में, और मोह में यह मन रंगा जाता है, असलियत की सुध नहीं आती है, अब इस भूल से निकलने का उपाय आगे फिर बयान करेंगे वही।

गुरूमुख इह मन रंगिए दूजा रंगु जाई राम।

कहते हैं कि जब गुरूमुख मिलता है, गुरूमुख होता है जो किसी अनुभवी पुरूष के सन्मुख बैठता है, इस मन को एक नया रंग मिल जाता है जो कभी उतरने वाला नहीं। समझे ! ऐसा वह मंजीठे का रंग है जो कभी उतरता ही नहीं, जिस पर और कोई रंग चढ़ नहीं सकता, नाम का महारस मिल जाता है, उस रस को पाकर दुनियां के रस फीके पड़ जाते हैं, फिर भूल में नहीं जाता है। यह माया और काल उसके आंखों के सामने भूल का परदा फैला नहीं सकते, वह Clear-Cut (स्पष्ट) देखता है बात क्या है।

दूजा रंग जाई साचि समाई सचि भरे भण्डारा। गुरूमुखि होवै सोई बूझे सचि-सवारण हारा॥

अब कहते हैं, द्वैत का आलम, रंग जो है, इससे उतर जाता है। तो क्या होता है ?

''दूजा रंग जाई साचि समाई सचि भरे भण्डार।'' सच में समा जाता है, भण्डारों के भण्डार, उसमें Untold Treasures खुल जाते हैं। किनके आगे ? फिर फरमाते हैं, ''गुरूमुख होवे सो ही बूझे सच सवारण हारा।'' जो गुरूमुख है वही इस गति को बूझ सकता है, जान सकता है। यह सच ही सबके सवारणे वाला है, जो सच के साथ लग गये सच का स्वरूप बन गये। जो उनके साथ लगे वह भी सत् के साथ जुड़ गये।

गुरूमुख कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कर्णीं।

करोड़ों जीवों का गुरूमुख उद्धार करता है। गुरूमुख कौन है ? जो गुरू का मुख बन गया, Guruman बन गया, वह नहीं, उसमें गुरू बोलता है। ऐसी हस्ती की यह गति बयान कर रहे हैं। अब यह सवाल आता है कि यह गुरूमुखता किसी अनुभवी पुरूष का मिलना, नाम के साथ लगना, सच्चे सौदे का करना, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना, यह कैसे नसीब हो सकता है, सवाल यह है। आगे इसका गुरू अमरदास जी साहब जवाब देंगे।

गुरूमुख होवै सोही बूझे सचि सवारण हारा।
आपे मेले सो हरि मिले होर कहणा किछु न जाए॥

जिसको वह मालिक आप मिलाना चाहे वही मिल सकता है। कहते हैं इसमें किसी और बात का दखल नहीं है।

धुर कर्म पाया तुध जिनको से नाम हर के लागे।

वह कृपा करे, मिलाना चाहे, तो क्या करता है ? किसी मिले हुये को मिला देता है।

कृपा करहि ता सत्गुरू मेलहि हरि हरि नाम, धियाई।

वह नाम के साथ जोड़ता है उसके अन्तर कौन काम करता है ? उसमें वह प्रभु बोल रहा है।

हर की पूजा सत्गुरू पूजो कर कृपा नाम तरावे।

हरि की पूजा क्या है ? सत्गुरू की पूजा ही है। जो सत् का स्वरूप हो गया, उसके अन्तर वही बैठा अपने साथ आप जोड़ रहा है। शम्स तबरेज साहब ने कहा कि उस प्रभु ने हमको बाहर निकालकर अन्दर से जन्दरा (ताला) लगा दिया है। इन्द्रियों के घाट में, फैलाव में पहुंचाकर फिर आप ही इन्सान बनकर उस ताले को खोलने आता है।

गुरू कुन्जी पाहू, निबल मनु कोठा तनु छयि। गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हाथ॥

बगैर अनुभवी पुरूष के, जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाता है, हमको ऊपर ले जा

सकता है, अन्दर की आंख खोल सकता है। यह दौलत सबमें हैं।

सबो घट मेरे साईयां सुन्नी सेज न कोय। बलिहारी तिस घट के जा घट परगट होय॥

जिस घट में यह प्रगट हो गया, वह बलिहार जाने के काबिल है। हम उसके पास जाते हैं, कि महाराज दया करो हमें भी प्रगट कर दो। है हममें, आगे ही। सिर्फ हमारी सुरत मन इन्द्रियों के घाट पर दबी पड़ी है, बाहिर का रूप बनी बैठी है, बाहिर से हटाकर —

खैंचे सुरत गुरू बलवान।

वह Way-up करता है, यह (शिष्य) देखता है, हां कुछ पूंजी मिल गई है।

जीय दान दे भगति लाईन हरि सिउ लैन मिलाए।

जीवन का उभार मिल जाता है। हमारी आत्मा, जो जन्मों जन्मों से मन इन्द्रियों के घाट पर दबी पड़ी है, इसको Way-up करता है, Labour लगाता है, यह ऊपर आता है, देखने वाला बन जाता है, जीवन सफल हो जाता है।

आपे मेले सो हरि मिलै होर कहणा किछु न जाए।
नानक बिण नावे भरयि भुलाइया इकि नाभि रते रंग लाणा।

आखर आकर गुरू अमर दास जी साहब फरमाते हैं कि जो नाम में नहीं लगे, वह भूल में रहे। समझे ! और इस नाम के रत जाने से नशा आ जाता है। इस रंग की खातर हम जाते हैं महापुरूषों के पास।

महा पवित्र साध का संग। जिस, भेटत लागे प्रभु रंग॥

तो यह श्री गुरू अमरदास जी साहब का शब्द था जो आपके सामने रखा गया। किनको उपदेश है ? As a man problem (सब मनुष्य जाति के लिये) है। किसी समाज में रहो, किसी मुल्क में रहो, अपने बोले रखो, अपनी अपनी समाज में रहो। किसी समाज में रहना एक बरकत है, मगर उसमें रहकर इतने ऊंचे चढ़ो कि सारी मनुष्य जाति ही तुम्हारी एक समाज बन जाये। और यह दौलत सबके अन्तर है, ख्वाहे आप किसी समाज में हो। रविदास जी चमार थे, नाम देव छीपे थे। फिर ! तुलसी साहब ब्रह्मण थे, स्वामी जी खत्री थे। अरे भई खत्री, ब्राह्मण, शूद्र, वैश्य, हमने बनाये। परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये। एक जैसे हकूक सबको दिये। जिनको कर्मों के संस्कार से रूचि बन गई, वह इस तलाश में लगे। पैदा होते ही बन गये, या जीते जी सोहबत संगत का रंग लेकर बन गये, अनुभवी पुरूष के चरणों में बैठकर अनुभव पा गये। उनका जीवन सफल हो गया। जिनको

ऐसा समय नहीं मिला, वह जन्म बरबाद हो गये। महापुरूष जो हैं यही देखते हैं दुनियां गलती में जा रही है। वह Out of Compassion दया करते हैं। लोग उनको बुरा भला कहते हैं, वह इस बात की परवाह न करके कहते हैं आत्मा देह धारी हैं, शायद बिचारे इस दुख से बच जायें, इसलिये पर उपकार की खातर वह दुनिया में आते हैं, भूले हुये जीवों को चिताते हैं, जो सफल कर जाते हैं। यह उनका काम कर रहा है।

भई जिन्दगी जिन्दगी से है, कि जिन्दा पुरूष से मिलने से, जो जिन्दा हैं उसकी सोहबत का नाम सत्संग है। तुमको जिन्दा कर देगा। नये सिरे से फिर हरा कर देगा तो यह तालीम किन लोगों के लिये है ? सब मनुष्य जाति के लिये। हमेशा से यह एक सी तालीम रही है और रहेगी, न बदली है न बदल सकती है। मनुष्य जीवन पाकर जिसको किसी महापुरूष की सोहबत मिल गई, नाम का रंग मिल गया उसका जीवन सफल हो गया। आपको पता है सिख भाइयों में रात को अरदास क्या करते हैं - कैसे अरदास करते हैं —

गुरू मुख का मेल साध का संग नाम का रंग सेही प्यारे मेलजिनां मिलिंया तेरा नाम चित आये नानक दास इहै सुख मांग। मोकउ करौ सन्तन की धूरे ॥

जाको आये सोही बिहाजो।

जिस काम के लिये आये हो वही काम करो भई - किस काम के लिये आये थे ? मनुष्य जीवन मिला था प्रभु के पाने के लिये, यही समय था जिसमें यह काम करना था। It is thy turn to meet God अगर यह काम नहीं किया जीवन बरबाद कर गये।

✦ ✧ ✦

रूहानी सत्संग नि:शुल्क भेजे जाते हैं।
Ruhani Satsangs are sent Free of Cost.